Vol. 6, Issue: 1, January: 2018
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

कहानी ''खान–ए–पिदरी''(पुश्तैनी घर) के लेखक सईद नफ़ीसी

डा. तसनीम कौसर चिश्ती
एसोसिऐट प्रोफेसर,
फारसी विभाग
करामत हुसैन एम.जी. पी.जी. कॉलेज, लखनऊ

सईद नफ़ीसी (जून 1895ई0 तेहरान–13 नवम्बर तेहरान 1966ई. तेहरान) एक ईरानी विद्वान, विपुल कथा लेखक और कवि थे। उन्हों ने तेहरान में ईरानी संस्कृति, सहित्य और कवीता पर कई शोध परियोजनाएं संचालित कीं। वह पहली बार एक गंभीर विचारक के रूप में उभरे जव वह 1918ई0 ईरान में प्रकाशित होने वाली पहली सहित्यक पत्रिकाओं में से एक को खोजने के लिए मोहम्मद तक़ी बहार, अब्बास इक़बाल आशतियानी, रशीद यासमी और अब्दुल्लाह हुसैन आदि के साथ शामिल हुए। उन्हों ने बाद में कई पत्रिकाएं प्रकाशित कीं। उनके द्वारा रचित ईरान पर लेख, फारसी सहित्यक ग्रंथ और सूफीवाद आदि हैं। उनके कार्यें का संसार भर में बीस से अधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया है। सईद नफ़ीसी के रिश्तेदारों में ईरान के शाह (राजा शाह पहलवी) के अभिभावक और डा. मोअद्दब नफ़ीसी शामिल हैं। मोअद्दब नफ़ीसी के बेटे हबीब नफ़ीसी एक वरिष्ठ राजनेता, ईरान के श्रम कानूनों के संस्थापक, य.एस., ईरान अताशे और तेहरान में कई तकनीकी विश्वविद्यालयों के संस्थापक हैं। हामिद नफ़ीसी, मीडिया और सांस्कृतिक अध्ययन के एक प्रसिद्ध विद्वान हैं। सियामक नफ़ीसी, एक मनोविज्ञानी साथ ही प्रशंसित लेखक हैं। आजार नफ़ीसी उनकी भतीजी हैं। सईद नफ़ीसी ने तेहरान विश्वविद्यालय, काबुल विश्वविद्यालय, काहिरा विश्वविद्यालय, और सैन जोस राज्य विश्वविद्यालय में पठन पाठन का कार्य किया। सईद नफ़ीसी के पिता का नाम अली अकबर था जो एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे। सईद नफ़ीसी का जन्म सन 1895इ. में तेहरान में हुआ था।

सईद नफ़ीसी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता द्वारा स्थापित एक स्कूल में प्रारम्भ की और उस समय के एक मात्र हाई स्कूल, एलीए स्कूल में हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की। इस के पश्चात वह पंद्रह वर्ष की आयु में वह स्विज़रलैन्ड चले गए और पैरिस विश्वविद्यालय में अपनी शिक्षा जारी रखी। ईरान लौटने के बाद उन्हों ने फ्रेंच पढ़ाने साथ–साथ, उन्हों ने राजनैतिक और आर्थिक स्कूलों जैसे अन्य स्कूलों में पढ़ाया और उन्हों ने इस की नीव रखने के बाद से तेहरान विश्वविद्यालय के सहित्य संकाय और कानून संकाय में भी पढ़ाया। उन्हों ने ईरान के बाहर बैरूत, क़ाहिरा आदि में भी पढ़ाया। वह ईरान अकैडमी (फ़र्हंगिस्तान–ए–ईरान) के सदस्य थे। उन्हें किताबों का बहुत शौक़ था, और उन्हों ने अना सारा पैसा किताबों पर खर्च कर दिया। उनका विचार था कि पुस्तकें प्रकाशित हों और लोगों के लिए उपलब्ध हों ताकि लोग पढ़ सकें और सीख सकें। वह उस चीज़ को इकटठा करते थे जिसका किताबों और सहित्य से सम्बंध था। अपने अंतिम वर्षों में उन्हों ने ईरान के बारे में रूसी पुस्तक एकत्र कीं। ऐसा कहा जाता है कि उनका सुभाव कठोर था लेकिन उनका हृदय दयालू था। और वह जल्दी शांत हो जाते थे। वह बहुत ईमानदारी से लिखते थे जो कभी कभी दूसरों को परेशान किया करता था।

bjkuh y[kd lbn uQhlh }kjk jfpr dgkuh ^^[kku&,&finjh** dk fgUnh e vuokn

80 वर्ष पूर्व एक वृद्ध व्यक्ति ईरोनियों की प्राचीन नसल से था और वह हिरात (स्थान का नाम) में रहता था नसरूल्लाह की आयु 74 वर्ष की हो चुकी थी! वह असल में देहेख़ुवारकान के लोगों में से था। यानि नसरूल्लाह का सम्बंध देहेख़ुवारकान से था। परन्तु उसे संसार के हालात उसे हिरात ले गऐ थे नसरूल्लाह के हालात इस प्रकार के हो गऐ थे कि उसे विवश होकर हिरात में रहना पड़ा। और वह इसी शहर में यानि हिरात में कुलीगीरी का काम करता था नसरूल्लाह उन लोगों में से था जो किसी चीज़ से दिली लगाव नहीं रखते थे। वह बचपन में ही अनाथ हो गया था और उसने कभी शादी भी नहीं की थी। वह घरेलू भावनाओं को बेकार समझता था। अगर वह रात्रि में किसी महिला को देखता था कि वह अपने छोटे बच्चे को कस कर बग़ल में पकड़े हुऐ मतलब गोद में लिए हुए है और उसे चुम्बन दे रही है तो वह आशचर्य इस बात पर करता था क्यूँ कि जब वह एक स्थाई घर नहीं रखता था नसरूल्लाह अपनी रात्रि किसी भी स्थान पर व्यतीत कर लेता था। उसके लिए कभी भी यह बात सामने नहीं आई थी कि वह किसी एक स्थान से अपने प्रेम को दर्शाए या वह एक दूसरी जगह की उस सरज़मीन से अधिक अच्छा समझे।

आख़िरकार यह वृद्ध व्यक्ति उन आज़ाद दर्शनिकों में से था जिसका सम्बंध किसी भी चीज़ से दोस्ती या दिली सम्बंध नहीं रखता था यानि नसरूल्लाह को किसी भी वस्तु से गहरा लगाव नहीं था और उसने अपनी आयु में किसी से प्रेम भी नहीं देखा था और इसी कारण सदा वह कहता था कि संसार की कोई भी वस्तु उसको क़ैद नहीं कर सकती (यानि वह संसार की किसी भी चीज़ के प्रेम में

कभी भी नहीं पड़ सकता) और अगर प्रेम हो जाऐ तो उसे के संसार का एक एक दिन ख़राब हो जाएगा। वह बहुत ठंडे खून के कमाल के साथ और बिना किसी भी प्रकार के खेद के साथ संसार से अपना सामान बांध लेगा यानि उसे इस संसार से बिना प्रेम के भाव जाने का बिलकुल भी खेद न होगा। नसरूल्लाह की यही सारी आस्था इस बात का काराण बन गई थी कि वह किसी के साथ आना जाना यानि सम्बंध नहीं रखता था मतलब नसरूल्लाह के लोगों के साथ समाजिक सम्बंध शून्य थे और वह किसी से दोस्ती नहीं करता था।

ख़ुरासान में संग्राम हो गया कुछ ईरानी लोगों ने विजय प्राप्त करली औ अंततः बाजीगरों यानि चाल चलने वालों के कारण हिरात के अंदर आ गए और बहुत से दूसरे आस पास के इलाकों को अंग्रेजों ने छोड़ देने को कहा था यानि अंग्रेजों के द्वारा हिरात के इलाक़ों को छोड़ कर दूसरे स्थानों पर जाने के आदेश ने हिरात के सारे लोगों को दुखी और उदास कर दिया था और केवल नसरूल्लाह जो कि (इस समाचार को) सुन्ने से दुखी नहीं था। शहर के मालदार लोग सभी एक विशेष प्रकार की देश प्रेम की भावना रखते थे परन्तु इसके अलावा हिरात शहर को मजबूरी की अवस्था में उन्हों ने अपना देश छोड़ा और ख़ुरासान का रास्ता सामने लिया मतलब शहर के सारे अमीर लोग बावजूद मजबूरी के ना चाहते हुऐ भी ख़ुरासान जाने का मार्ग अख़्तियार कर लिया। हर व्यक्ति थोड़ा सा या ना के बराबर क़ीमती सामान या रूपया पैसा जाएदाद को बहुत ही कम दामों में या कौड़ियों के मोल सस्ते दामों में बेच रहा था कि मशहद में पुनः ईरान के अन्य शहरों में मकान लेगा या मकान बनाऐगा।

यह बात विश्वासनीय है कि इस मौक़े पर ऐसी हालत में नसरूल्लाह का काम मुसाफिरों के सामान को ढ़ोना पहले से कहीं अधिक बढ़ गया था और उसकी रोज़आना की आय में वृधी या बढ़ोतरी हुई होगी। यानि सामान को उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में उसको रोज़मर्रा की आमदनी में कार्य के अनुसार से बढ़ोतरी नहीं हुई थी।

रातों को जिस समय कि नसरूल्लाह (काम से) मुक्ति पाता तो हिरात के चाय खानों में शहरियों के ढंग पर व्यंग करता (या उन लोगों को जो हिरात छोड़ कर मशहद या अन्य स्थानों पर जाने के लिए व्यार हो रहे थ इन लोगों के काम के इस तरीके को देखकर नसरूल्लाह उन लोगों को बुरा भला कहता था) उन लोगो के सामान ले जाने पर उनकी दीवानगी और दिमाग़ का हलकापन समझता था। यानि लोगों का अपना कीमती सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना नसरूल्लाह को बिलकुल मूर्खता का काम लगता था। उसके विचार में एक व्यक्ति जो कि अपना कीमती सामान बेकार के विचार के कारण अपने हाथ से जाने दें रहे थे और अपनी आयु के अंत में यानि वृद्ध अवस्था में सफ़र की कठिनाईयों को अपने ऊपर लाद रहे थे। लगता है दीवाने होंगे। शायद सब स्थान ईशवर के स्थान नहीं है हिरात को मशहद से क्या अंतर है? (यानि नसरूल्लाह के सामने हिरात और मशहद दोनों ही तो एक स्थान हैं तो दोनों स्थानों के बीच अंतर कैसा? नसरूल्लाह को इस बात पर अधिक अशचर्य था कि अगर यह दीवाने लोग खुद अपने आप जा रहे हैं तो वह क्यूँ दिली बोझ के साथ दुखी होकर यहाँ से जा रहे हैं?

अगर यह लोग अपने घरों से प्यार करते हैं तो फिर इनको क्यों छोड़ रहे हैं? हिरात के बुजुर्ग और नसरूल्लाह के जान्ने वाले जितना ज्यादा चाहते थे कि नसरूल्लाह को समझाऐं कि मानव सदा अपने देश और जन्म स्थान को पसंद करता है (यानि अपने पैदा होने की जगह और अपने देश को दिलो जान से प्रेम करता है) और किसी भी क़ीमत पर उस से इतनी आसानी से अलग होना नहीं चाहता तो नसरूल्लाह उसको नहीं सुन्ता था। यानि वह असल में समझता नहीं था और वह अपने इसी विचार पर अटल था (यानि अगर नसरूल्लाह को लोग समझाने की कोशिश करते कि देश और स्थान से हर एक को प्रेम होता है तो वह यह बात सुन्ना पसंद नहीं करता था क्यूँकि वह वास्तव में प्रेम के भाव से परिचित ना था इसलिए वह अपने ही विचारों में डूबा रहता।

एक दिन हिरात के कबाईली सरदारों या ख़ानों ने नसरूल्लाह कुली को बुला लिया और उस से कहा ''नसरूल्लाह अब तुम बूढ़े हो गऐ हो'' और अब तुम (इतने मेहनत वाले) काम की शक्ति नहीं रखते। मैं भी यह चाहता हूँ कि हिरात से बाहर जाऊँ और वह मेरा बाग़ीचा जो कि शहर से बाहर है बिना स्वामी के हो जाऐगा (यानि इस बाग़ का कोई रखवाला नहीं होगा) इस लिए क्यूँ कि बहुत से व्यक्ति घर बेच कर चले गऐ हैं क्यूँकि अब कोई खरीदार नहीं है। इस लिए इस (बाग़) को मैं तुम को दे देता हूँ ताकि मेरे जाने के बाद इसका क्या होगा? (यानि मेरे जाने के चश्चात इस बाग़ का क्या होगा? तुम भी अति शीघ्र इस स्थान की रखवाली करने वाले बन जाओ और मैंने तुम्हें (यह बाग़) दे दिया है। इस जायदाद में से जो मैं आस पास रखता हूँ वह सब तुम्हारे लिए रोज़ी रोटी का साधन हो जाऐंगी या तुम तक इस से मुराद जायदाद से रोज़ी रोटी मिलेगी। तुम भी इस जगह हो जाओ (यानि तुम भी उस स्थान यानि बाग़ में चले जाओ) ताकि तुम अपने आयु के अंतिम समय में रोज़ी रोटी की व्यवस्था करने में विवश होकर ना भटको।'' यानि वृद्ध अवस्था में तुम दो वक़्त की रोटी के लिए विवश होकर भटकते ना फिरो। नसरूल्लाह अब थोड़ा थोड़ा बुढ़ापे को अपने अंदर महसूस कर रहा था यानि अब नसरूल्लाह को अपने अंदर बुढ़ापे की कमज़ोरी का एहसास हो रहा था। उस ने ईशवर से चाहा कि उसी प्रकार से उस पर पुनः अपनी कृपा कर। उसने तुरन्त अपना सामान उठाया और उस शहर से बाहर वाले बाग़ीचे में चला गया।

काफी दिनों तक अपनी पुरानी आदत के अनुसार जलदी नींद से जाग जाता था वह अपना सारा समय बाग़ीचे के पेड़ों और फूलों की देख रेख करने में व्यतीत करता था। जब वह अपने काम से थक जाता था तो बाग़ के बीच की नहर के किनारे बैठ जाता था और सोचता था उस समय उसने एक नई चीज़ देखी थी एक दिन अचानक उसे ख़बर हुई। पत्थर के छोटे टुकड़े जो कि पानी की तह के नीचे ठहरे हुऐ थे बिलकुल उसी प्रकार से हैं कि उस स्थान पर उन पत्थर की कंकड़ियों ने उस जगह अपना घर बना लिया है। वह पत्थर की कंकड़ियाँ सदेव पानी के तेज़ बहाव से मुक़ाबला करती हैं यह बिलकुल इस प्रकार से है कि पानी चाहता है कि अपनी ताकत से यानि अपने तेज़ बहाव से (पत्थरों को) उनके घर से बाहर कर दे परन्तु वह पत्थर की कंकड़ियाँ अपना असत्तिव प्राप्त करने के लिए पीछे नहीं हटते। पानी और पत्थ्र की छोटी कंकड़ियों के बीच अपने असत्तिव को क़ायम रखने के लिए सख़्त मुकाबला जारी है।

अंततः एक दिन अंग्रेजों ने हिरात को अपने कब्ज़े में ले लिया। वह लोग जो कि शहर छोड़ कर चले गए थे उन लोगों की जायदाद पर अंग्रेज़ों ने कब्ज़ा कर लिया और उन सब में ख़ान का बाग़ भी शामिल था। नसरूल्लाह भी विवश हो गया था वह ना चाहकर भी उस बाग़ से बाहर जाए। क्यूँकि अब बाग की देखभाल (के लिए बूढ़ा देहेखुवारक़ानी आदमी नहीं चाहता था।) अंततः नसरूल्लाह क़बाइली अध्यक्ष था वह ख़ान के बाग़ से चला गया परन्तु वह बेइख्तियार होकर रोज़ाना बाग़ में लौट आता था और दरवाजे के छेद से अंदर की ओर हसरत भरी नज़र से देखता था यानि वह बहुत हसरत से बाग़ पर निगाह डालता था। वास्तव में वह आज़ाद और बिना घर के उसका दिल नहीं कर रहा है कि वह उस (बाग़) के परिसर से बाहर जाऐ। हर समय बाग़ के पेड़ों और फूलों का दृश्य उसको याद आता था। वह बेइख्तियार होकर (बाग़) के नवीन स्वामियों पर अपशब्दों का प्रयाग करता था और कभी रो पड़ता था।

जब कोइ दूसरा व्यक्ति उसके व्यय या खर्चे नहीं देता था। वह विवश हो गया था कि वह कुलीगीरी का पेशा पुनः अपना ले। परन्तु यह कुली आज से दो महीने पूर्व का कुली नहीं था। वह नसरूल्लाह आज़ाद जोकि किसी व्यक्ति को दोस्ती और दुशमनी को अपने हृदय में स्थान नहीं देता था अब वह हर समय विवश हो रहा था कि नऐ आऐ हुऐ व्यक्तियों के एक बोझ को अपने कंधे पर पकड़े (यानि उठाए) हृदय में दुशमनी को जड़ से उखाड़ फेकें। और बार बार ऐसा इत्तिफाक पड़ता था कि रास्ते के बीच में बेइख्तियार एक वस्तु उसको सक्रिय करती थी कि वह उस इस बोझ को पृथ्वी पर रख दे। शायद वह इस विचार में पड़ गया था या नसरूल्लाह इस सोच में डूबा हुआ था कि वह इस को तोड़ दे। नसरूल्लाह की सारी शत्रुता या विरोध उन स्वामियों से इस बारे में था कि उसको ख़ान ने बाग़ से और पत्थ्र की छोटी कंकड़ियाँ जो कि पानी के चंगुल में गिरफतार हो कर उसके दिमाग से गुज़रें। उसे याद आया कि किस प्रकार से पत्थर की यह छोटी कंकड़ियाँ अपने स्थान से दरबदर होकर पानी के तेज़ बहाव में ज़िद पकड़ कर संघर्ष कर रहे हैं और वह पत्थर की छोटी कंकड़ियाँ कदापि यह नहीं चाहतीं कि वह अपने स्थान से बाहर जाऐं।

अगले दिन से फिर पुनः किसी व्यक्ति ने नसरूल्लाह को हिरात में नहीं देखा और दो महीने पश्चात एक व्यक्ति जिस को देहेखुवारकान में लोगों ने नसरूल्लाह की जवानी को देहेखुवारकान में देखा था लोगों ने एक वृद्ध, टूटा हुआ, ना पहचान्ने वाले को देखा था जो कि लाठी के सहारे धूल मिट्टी से अटा हुआ यात्रा का थैला अपनी लाठी पर बाँधे हुऐ था और रजब अली के घर का पता ढूँड रहा था यानि अब वृद्ध अवस्था में नसरूल्लाह अपने पुशतैनी घर देहेखुवारकान में अपने पिता रजब अली का घर ढूँड रहा था।

InHk Iph

1.नक़शहा–ए–रंग रंग गिरोहे–व–अदबियाते फारसी दानिशगाहे इस्लामी–ए–अलीगढ़,जून सन : 2015
2.फिफ्टी इयर्स आफ़ परशियन लिट्रेचर इन ईरान लेखक : डा. रजिया अकबर
3.आ प्राईमरी ऐनालिसिज़ आफ़ मॉडर्न परशियन परोज़ इंडो ईरानिका, वॉलयूम – 13 सन : 1971
4.अदाबियाते दास्तान लेखक : जमाल मीर सादक़ी इंतिशाराते माहूर, तेहरान,ईरान
5.अज़ सर गुज़श्त नवीसी बे दास्तान नवीसी तालीफ़ :दुकतर कुदसिया परवीन रिज़वानियान उज़वे हैयते इस्लामी, दनिशगाहे माज़िंदरान, इंतिशाराते मोहम्मद नाज़िमुल इस्लाम, तेहरान, ईरान